भाकृअनुप – केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान

श्री गंगानगर राजमार्ग, बीछवाल, बीकानेर -334 006 (राज)

ICAR- CENTRAL INSTITUTE FOR ARID HORTICULTURE

Sri Ganganagar Highway, Beechwal- BIKANER-334 006

e-mail- *ciah@nic.in, www.ciah.icar.gov.in.* Phone-0151-2250960 : Fax-2250145

एडवाईजरी-I,2021 **दिनांक 21.04.2021**

किसानों के लिए शुष्क बागवानी फ़सलों के बारे में सलाह

1. इस समय जो कददूवर्गीय सब्ज़ियां फलन पर आ चुकी हैं उनमें मौसम में बदलाव के कारण फल मक्खी के प्रकोप की सम्भावनाएं रहती है। इसके नियंत्रण के लिए ग्रसित फलों को तोड़कर जमीन में दबा दें। खेत में 8-10 क्यूलूर ट्रेप प्रति हक्टेयर की दर से खेत में लगा सकते हैं। यदि फल मक्खी का प्रकोप बहुत ज्यादा हो तो डाईमेथोऐट (30 ई सी) 1.5-2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर या स्पीनोसैड (45 एस सी) का 0.4-0.5 मिली. प्रति लीटर पानी के हिसाब से साफ मौसम में छिडकाव करना चाहिए।

2. शुष्क क्षेत्रों में मुख्यत: काचरी, काकड़िया, तरबूज़, खरबूजा, तरककडी, तोरई, लोकी इत्यादी की खेती बहुतायत से की जाती है। इन फसलों में मौसम में बदलाव के कारण इस समय मोज़ेक रोग आने की अधिक सम्भावना है जो एफिड के द्वारा फैलता है। मोज़ेक रोग से प्रभावित पेड़ की पत्तिया छोटी एवं बढ़वार कम हो जाती है। इसके नियंत्रण करने के लिए प्रभावित पोधों को जड़ सहित उखाड़कर या तो मिट्टी में गाड़ दें या खेत के बाहर ले जाकर जला दें। इसकी प्रभावी रोकथाम के लिए ईमिडाक्लोप्रिड (17.8 एस.एल.) का 0.4 से 0.5 मिलीलीटर प्रति लीटर का छिडकाव करना चाहिए।

3. इस समय कद्दूवर्गीय सब्जियों में म्लानि (विल्ट) रोग भी आ सकता है। इस रोग से पत्तियां पीली पड़ जाती है और पौधा मुरझाकर सूख जाता है। इस रोग की रोकथाम के लिए डाईफेनोकोनाजोल 0.5 - 1.0 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर पौधों में ड्रेंचिंग करें तथा नीम की पत्तियों का रस निकालकर, 5.0 मिली. रस को 1.0 लीटर पानी में मिलाकर दस दिन के अंतराल पर दो बार छिड़काव करें।

4. किसान भाईयों को यह भी सलाह दी जाती है कि गर्मी के मौसम में सब्जी एवं फलों की तुड़ाई उचित समय पर करें। इनके अच्छे विपणन हेतु इनके आकार एवं रंग के आधार पर उचित प्रकार से ग्रेडिंग व पैकिंग करने के बाद ही बाजार में बेचें ताकि इनका उचित भाव मिल सके। फलों की तुड़ाई सुबह के समय ठंडे मौसम में करें।

5. आने वाले समय में वातावरण का तापमान बढ़ सकता है और गरम हवा चल सकती है। इसीलिए, किसान भाईयों को सलाह दी जाती है कि मौसम के बदलाव को ध्यान में रखते हुये सब्जियों की फसलों व फलों के बगीचे में उचित तरीके से समय-समय पर सिंचाई करते रहें और नमीं सरक्षण के लिए उचित पुआल जैसे घास-फूस व शेडनेट का भी उपयोग कर सकते हैं।

6. गर्मी के मौसम में अनार में माईट का प्रकोप अचानक बढ़ जाता है। यह कीट पत्तियों का रस चूसता है। जिससे पत्तियों की नीचली सतह सफ़ेद भूरे रंग की हो जाती हैं और पत्तियां मुड़ कर गिरने लगती है। इस कीट के नियंत्रण के लिए प्रोपारजाईट (57 ई.सी.) का 1.5-2.0 मिली. प्रतिलीटर अथवा ऐस्पायरोमेसिफेन (240 एस.सी.) का 0.4-0.5 मिली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर बारी बारी से छिड़काव करें तथा नियमित सिंचाई करें।

7. इस समय कोविड-19 की दूसरी लहर चल रही है। इसके संक्रमण से बचने के लिए किसान भाईयों को सलाह दी जाती है कि अपने खेती कार्य करते समय उचित सामाजिक दूरी (6-7 फीट) बनाए रखें, हाथों को साबून से बार-बार धोते रहें। खेत में कार्य करते समय अपने मुँह पर मास्क का प्रयोग अवश्य करें तथा किसी भी भीड़-भाड़ वाली जगहों पर अनावश्यक जाने से बचें। इसके साथ ही कृषि कार्यों में उपयोग लिए जाने वाले औज़ार व मशीन जैसे थ्रेशर, ट्रेक्टर, ट्रोली, हल, स्प्रेयर व अन्य औजारों की सफाई व उचित सेनीटाईजेशन करके ही उपयोग में लें।